The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

डॉ० रिफाकत अली
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुनस्यारी (पिथौरागढ़), उत्तराखण्ड, भारत

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Article History

Accepted: 15-01-2025

Published: 11-02-2025

Keywords:

दलविहीन लोकतंत्र, दलीय राजनीति, समाजवाद, सर्वोदय

ABSTRACT

जयप्रकाश नारायण एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के पक्ष में नहीं थे; जिसमें व्यक्ति को मात्र इकाई मानकर कार्य कराया जाता हो अर्थात् उसकी कीमत वोट देने तक ही आँकी जाती हो। वे यह भी स्वीकार करने को तैयार न थे कि इस व्यवस्था में व्यक्ति अधिक स्वतन्त्र रहता है; बल्कि उनका कथन था कि व्यक्ति इस व्यवस्था में बेनाम मुहरा बनकर ही रह जाता है। उनके अनुसार समुदाय की एक विकसित भावना में ही व्यक्तित्व का समुचित विकास सम्भव हो सकता है; मनुष्यता की दृष्टि से विकास के उच्चतम शिखर पर वह इसी रास्ते जा सकता है। जयप्रकाश नारायण इस सिद्धान्त में विश्वास रखते थे कि व्यक्ति को समाज के लिए तथा समाज को व्यक्ति के लिए मर-मिटने को तैयार रहना चाहिए। दोनों ओर इस प्रवृत्ति के विकास के साथ ही व्यक्ति तथा समाज दोनों का विकास सम्भव हो सकेगा। जयप्रकाश नारायण व्यक्ति और समाज दोनों को एक दूसरे का अन्यन्योनाश्रित मानते थे।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.14864132

प्रस्तावना

जयप्रकाश नारायण पर महात्मा गांधी एवं एम०एन० राय का प्रभाव पड़ा। जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवाद के प्रमुख नेता, प्रचारक, प्रवक्ता और एक महान राष्ट्रीय संघर्षकर्ता भी रहे हैं। गांधी जी की मृत्यु के पश्चात् जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक व्यक्तित्व में गहरा रूपान्तर हुआ। वे आभ्यन्तरिक परिवर्तन के उस सिद्धान्त को मानने लगे थे जिस पर गांधी जी ने बल दिया था। जयप्रकाश नारायण जनता की मुक्ति के लिए राजनीति को बेहद आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार, "अगर आप सचमुच स्वतन्त्रता, स्वाधीनता की परवाह करते हैं तो बिना राजनीति के कोई लोकतन्त्र या संस्था उदार नहीं हो सकती। राजनीति के रोग का सही मारक और बेहतर इलाज राजनीति ही हो सकती है, राजनीति का विरोध नहीं।"[1]

जयप्रकाश नारायण का मानना था कि लोकतन्त्र में एक विपक्षी दल का होना अत्यावश्यक है और समाजवादी पार्टी इसके लिए तैयार है। उन्होंने तय किया कि वे नेहरू सरकार में शामिल नहीं होंगे, बल्कि किसानों और काश्तकारों के बीच रहकर उनका विश्वास जीतेंगे। जयप्रकाश नारायण ने सदैव ही समाज सेवा को राजनीति से ऊपर रखा। उन्होंने दलीय

राजनीति की आलोचना करते हुए कहा कि, "दलीय राजनीति नेतागिरी को जन्म देती है, राजनैतिक नैतिकता को दबाती है तथा विवेकहीनता, कपट आचरण एवं षड्यन्त्र को बढ़ावा देती है।"[2]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(i) जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचारों को स्पष्ट करना।

(ii) जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का पता लगाना।

(iii) जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचारों के माध्यम से वर्तमान की राजनीतिक समस्याओं का समाधान खोजना।

अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत शोध-पत्र में दार्शनिक विधि, ऐतिहासिक विधि, विश्लेषण विधि एवं विवेचनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचार

जयप्रकाश नारायण का मानना था कि राज्य में प्रत्येक प्रकार की कुरीतियों, अराजकता एवं भ्रष्टाचार का विरोध करना चाहिए; इसमें शासन के अधिकारियों का व्यवहार व न्यायविदों के अन्याय भी शामिल हैं। संघर्ष के साधनों में उन्होंने सत्याग्रह, कर न देना, मतदाताओं को शिक्षित करना, लोक संघर्ष समिति द्वारा अन्याय का विरोध आदि को सम्मिलित किया है। यदि शासन इन गतिविधियों में शामिल नहीं हो रहा है और जनता को राहत नहीं दे रहा है तो जनता को अपने से संबंधित मामलों का प्रबंध अपने हाथों में ले लेना चाहिए अर्थात् जनता को स्वयं सरकार का निर्माण करना चाहिए।[3]

जयप्रकाश नारायण ने पं० जवाहरलाल नेहरू को पत्र में लिखा था कि, "आपको विश्वास होगा कि देश को आप समाजवाद की दिशा में ले जा रहे हैं; लेकिन आपकी अच्छी नीयत के बावजूद भी देश उल्टी दिशा में जा रहा है। इतिहास एक साथ एक ही दिशा में जा सकता है दो में नहीं। आप पूँजीवाद के सहयोग से समाजवाद का निर्माण करना चाहते हैं। आप दो घोड़ों पर एक साथ सवारी करना चाह रहे हैं यह सर्कस में हो सकता है, सत्ता की राजनीति में नहीं।"[4]

अतः लोकतन्त्र के लिए आवश्यक है कि राज्य पर जनता की निर्भरता यथासम्भव कम से कम हो।

जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचारों में दलविहीन लोकतंत्र का विचार प्रमुख है। जयप्रकाश दलगत राजनीति को जनता की असहाय स्थिति का कारण मानते थे; क्योंकि दलगत राजनीति समाज में नैतिक पतन, भ्रष्टाचार एवं स्वार्थ को बढ़ावा देती है। राजनीतिक दल शक्ति अपने हाथ में लेकर लोकतांत्रिक शासन के स्थान के पर स्वेच्छाचारी शासन को बढ़ावा देते हैं। छोटे-छोटे कार्य के लिए जनता को शासन पर निर्भर रहना पड़ता है। राजनीतिक दल उन्हीं सावर्जनिक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं; जिनसे उनका राजनीतिक स्वार्थ पूरा होता है। किन्तु जन-सामान्य की वास्तविक कठिनाइयों का निराकरण नहीं किया जाता। सत्ता-लोलुप राजनीतिक तत्वों द्वारा सार्वजनिक हित के नाम पर अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति की जाती है। सत्तारूढ़ दल ही नहीं अपितु विपक्ष भी इस होड़ में पीछे नहीं रहता। इसीलिए जयप्रकाश नारायण ने दलीय राजनीति के स्थान पर विकेन्द्रीयकरण का समर्थन किया। उनके अनुसार, "वर्तमान निर्वाचन पद्धति के स्थान पर जनता

द्वारा स्थानीय स्तर पर जन प्रतिनिधियों का प्रत्यक्ष मनोनयन होना चाहिए। ग्राम सभाओं द्वारा मतदाता परिषदों को चुना जाये। मतदाता परिषद् उम्मीदवारों का चुनाव करें और जिससे बहुमत प्राप्त हो उससे राज्य अथवा केन्द्र की धारा सभा के लिये निर्वाचित माना जाये। चुनाव में शक्ति, धन तथा समय की बचत के लिये एक स्थान के लिये एक ही उम्मीदवार प्रस्तुत किया जाये। सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति ही निर्वाचित किया जाये।"[5]

एक समाजवादी मनीषी के रूप में जयप्रकाश नारायण की शक्ति इस बात में थी कि उन्हें राजनीति के आर्थिक आधारों का सपष्ट ज्ञान था। ऐसा लगता है कि उन पर अमेरिका एवं ब्रिटेन के समाजवादी विचारों का प्रभाव पड़ा। उनका मानना था कि, "समाजवाद की स्थापना उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करके ही की जा सकती है। समाजवाद ही विशाल जन-समुदाय के आर्थिक शोषण की क्रूर प्रक्रिया का अन्त कर सकता है।"[6]

जयप्रकाश नारायण भूमिकर को घटाने, व्यय को कम करने तथा उद्योगों के राष्ट्रीकरण के पक्ष में थे। उस समय भारत की मूल आर्थिक एवं सामाजिक समस्या यह थी कि जनता के शोषण का अन्त कैसे किया जाए? यह तभी सम्भव था जब जनता अपने प्रयत्नों से आर्थिक और सामाजिक जीवन पर नियन्त्रण स्थापित कर लेती। इसके लिए आवश्यक था कि राष्ट्रवादियों तथा सामाजिक प्रगतिवादियों के कार्यकलाप के बीच सामंजस्य स्थापित किया जाए। जयप्रकाश नारायण के अनुसार, "समाजवाद उन प्रमुख मूल्यों के विरुद्ध नहीं है जिनका भारतीय संस्कृति ने पोषण किया।"[7] जयप्रकाश नारायण ने पूरा जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। वे चाहते थे कि, "समाज ऐसा हो जिसमें शोषण ना हो, सभी के साथ समानता का व्यवहार किया जाये; किसी के साथ अन्याय न होने पाये। उनका विश्वास समाजवाद में धीरे-धीरे कम होता गया और गांधी के सर्वोदय के प्रति अधिक हो गया।"[8]

जयप्रकाश नारायण का कहना था कि, "मैं सर्वोदय और समाजवाद, दल व सत्ता से बँधी हुई राजनीति तथा दल एवं सत्ता से मुक्त राजनीति या राजनीति और जिसे विनोबा केवल 'लोकनीति' कहते हैं कि समस्या की तह तक पहुँच गया। मैंने दल और सत्ता की राजनीति से अलग होने का निश्चय इसलिए नहीं किया कि मैं इससे ऊब गया या निराश हो गया था, बल्कि इसलिए अलग हुआ कि मुझे स्पष्ट हो गया तथा कि राजनीति से काम नहीं बनेगा।"[9] यहाँ यह समझ लेना आवश्यक है कि जयप्रकाश नारायण को राजनीति की विकृति ने विचलित नहीं किया, बल्कि सर्वोदय की नई राजनीति ने उन्हें आकर्षित किया है। "सर्वोदय की राजनीति एक अलग प्रकार की राजनीति है मैं इसे 'जनता की राजनीति' कहता हूँ, जो सत्ता और दल की राजनीति से हमेशा अलग है।"[10]

जयप्रकाश नारायण का मानना था कि चुनाव आदि की राजनीति के पीछे जितनी शक्ति खर्च होती है उससे आधी शक्ति ही इस नये मार्ग को खोजने के पीछे खर्च की जाये तो वातावरण कुछ अलग ही बनेगा। आज की मौजूदा शासन व्यवस्था और उसके दोषों के संबंध में हमें गंभीरता से सोचना चाहिए तथा हमें उन दोषों को दूर करने के उपाय सोचने चाहिए। "दलबंदी के झगड़े, दलों की अंदरूनी अनुशासनहीनता, सैद्धान्तिक ध्रुवीकरण के बदले स्वार्थ की खिचातानी, अवसरवादी गठबंधन, दलों, प्रतिनिधियों और प्रधानों का स्वेच्छाचार, सिद्धान्तों को किनारे रखकर व्यक्तिगत या निहित स्वार्थ के लिए होने वाले दल-बदल, पैसों का बेहिसाब खर्च, घूसखोरी, ये सब तो आसानी से हमारी नजरों के सामने आता रहता है; किन्तु इसके बावजूद भी हमें अधिक गहराई में जाना चाहिए।"[11]

भ्रष्टाचार के बारे में जयप्रकाश नारायण का कहना है कि, "व्यापार में, उद्योग में और हर जगह भ्रष्टाचार अवश्य है। लेकिन इसे तब तक दूर नहीं किया जा सकता जब तक राजनीति, शासन एवं सत्ता में व्याप्त भ्रष्टाचार पर काबू न पाया जाए। वहां से तो भ्रष्टाचार को जड़ से ही खत्म ही करना होगा। अन्य क्षेत्रों के भ्रष्टाचारियों को सत्ता के द्वारा और राजनीति के द्वारा पोषण मिलता है।"[12]

जयप्रकाश नारायण के विचार भी समय के साथ-साथ बदलते रहते थे; परन्तु उनका ऐसा प्रयास रहा कि, "समाज में शोषण, भुखमरी, गरीबी, भ्रष्टाचार तथा अन्याय का अन्त हो और समानता एवं बन्धुत्व कायम हो। उसके लिए वे हमेशा अहिंसा पर जोर देते हुए देश की राजनीतिक परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करते रहे। उनके राजनीतिक विचारों में सत्य, सहनशीलता, तटस्थता तथा तर्क शक्ति की विद्यमानता रहती थी।"[13]

निष्कर्ष

वास्तव में, जयप्रकाश नारायण के विचारक्रम में उतार-चढ़ाव के बावजूद भी, उसमें अन्तर्निहित मूल स्वर सदैव एक ही रहा- वह था, एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण जिसमें स्वतन्त्रता, समानता एवं बन्धुत्व की भावना व्याप्त हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने भारत के लिए एक नये प्रकार के समाजवाद की खोज की; जिसमें मार्क्सवाद, प्रजातान्त्रिक समाजवाद और गांधीवाद का समन्वय द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न हुआ था। दूसरे शब्दों में, उनकी विचार-यात्रा मार्क्सवादी आयाम से प्रारम्भ होकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसवादी, प्रजातान्त्रिक-समाजवादी, गांधीवादी, सर्वोदयी आयामों से गुजरती हुई सम्पूर्ण क्रान्ति की मंजिल तक पहुंच गई।

लोकतन्त्र को सफल बनाने के लिए जयप्रकाश नारायण ने दल-विहीन लोकतन्त्र की स्थापना पर जोर दिया। जयप्रकाश नारायण जन-क्रान्ति के द्वारा भारत में समाजवाद की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने सत्तात्मक राजनीति का विरोध किया तथा वे लोकतान्त्रिक- समाजवाद के पक्षधर थे। उनका मानना था कि सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीतिक दलों द्वारा प्रयोग किये जा रहे अनैतिक एवं अपवित्र साधनों पर कड़ा प्रतिबन्ध लगना चाहिए। अतः जयप्रकाश नारायण ने भारतीय राजनीति में निहित दोषों में व्यापक स्तर पर सुधारों की आवश्यकता पर जोर दिया।

वर्तमान समय में जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता इसलिए है; क्योंकि वे सही मायनों में जनता का शासन लाकर समाज में बदलाव लाना चाहते थे। उन्होंने सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव के समय झूठ बोलकर लोगों को गुमराह करना, अनैतिकता, धन-बल का प्रयोग करना तथा भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना आदि तरीकों की घोर आलोचना की। उन्होंने चुनाव में दल-बदल को प्रमुख समस्या माना जो वर्तमान समय में भारतीय राजनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जयप्रकाश नारायण ने भारतीय राजनीति पर कहा कि आज की राजनीति से देश और समाज में शोषण, गरीबी तथा अशान्ति को बढ़ावा मिल रहा है।

संदर्भ सूची

1. मेहरोत्रा, ममता (2019) : जयप्रकाश तुम लौट आओ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 7
2. किशोर, पंकज (2009) : लोकनायक जयप्रकाश नारायण, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 61
3. नारायण, जयप्रकाश (1975) : टोटल रिवोल्यूशन, सर्व सेवा संघ, वाराणसी, पृष्ठ 73
4. राजस्वी, एम०आई० (2008) : जयप्रकाश नारायण सम्पूर्ण क्रान्ति का शंखनाद, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ 95

5. नागर, पुरुषोत्तम (1980) : आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 564
6. नारायण, जयप्रकाश (1946) : टूवर्डस् स्ट्रगल, पद्मा पब्लिकेशन्स, बम्बई, पृष्ठ 77-78
7. 'उपरोक्त', पृष्ठ 86
8. नारायण, जयप्रकाश (2002) : समाजवाद से सर्वोदय की ओर, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 30
9. 'उपरोक्त', पृष्ठ 38
10. नारायण, जयप्रकाश (2016) : मेरी विचार यात्रा भाग-1, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 31
11. 'उपरोक्त', पृष्ठ 78
12. नारायण, जयप्रकाश (1975) : सम्पूर्ण क्रान्ति, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 9
13. नारायण, जयप्रकाश (1973) : समाजवाद, सर्वोदय एवं लोकतन्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पृष्ठ 171